हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

भाषा : संस्कृति विकास की सारथी

डॉ. जयश्री भास्कर वाडेकर

प्रस्तावना

संस्कृति की पूर्ण परिभाषा देना बड़ा कठिन काम है। अंग्रेजी में कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है संस्कृति वह कौन है जो हम में व्याप्त है दूसरे शब्दों में संस्कृति का संबंध आत्मा से है आत्मा की उन्नति में जो भी सहायक है वह सब के सब संस्कृति के उपकरण है। संगीत एवं विविध कला सब के सब संस्कृति के उपकरण ही है मन की रुचि का संस्कार जिन-जिन साधनों एवं उपकरणों से होता है वह सब के सब संस्कृति के क्षेत्र में आ जाते है। सभ्यता जहां बौद्धिक विकास है संस्कृति वहां मानसिक विकास है। मानसिक विकास होने से ही मानव, मानव बनेगा।

संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है। अपने द्वारा मानवी मूल्यों का अपने से भी बड़ा मानता है और उसकी रक्षा के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहता है। संस्कृति मानव जनित मानसिक पर्यावरण से सम्बन्ध रखती है। संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी अन्तःस्थ प्रकृति की अभिव्यक्ति है। संस्कृति के दो विभाग कहे जा सकते है भौतिक और अभौतिक। भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारी सभ्यता कहते है और हमारे जीवन के भौतिक पक्षों से सम्बद्धहोते है, जैसे हमारी वेशभूषा, भोजन, घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बध विचारों , आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से है। किसी भी देश के ल ोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं के द्वारा ही पहचाने जाते है। विश्व जैसे-जैसे जुड़ता चला जा रहा है, हम अधिक से अधिक वैश्विक हो रहे है और अधिक व्यापक वैश्विक स्तर पर जी रहे है। हम यह नहीं सोच सकते कि जीने का एक ही तरीका होता है और वही सत्य मार्ग है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे यह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धाराण करता है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि है। अब जबकि हरेक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए है। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश भारत बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के द्वारा भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते है। भारतीय संस्कृति मानव जाति के कल्याण के लिये है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव संस्कृति कहा जा सकता है। संस्कृति में वैचारिक पक्ष प्रबल होता है।

आदर्श और साधना की एकता मनुष्य की एकता जरुर देती है परंतु भाषा की भिन्नता मनुष्य की एकता को जागृत नहीं होने देती है। अपनी भाषा का संरक्षित करके ही संस्कृति और परंपरा का जतन किया जा सकता है। संस्कृति की परिभाषा में न केवल कला और साहित्य, बल्कि जीवन शैली, एक साथ रहने के तरीके, मूल्य

ISSN : 2582-9092

प्रणालियां और परंपराएं भी शामिल है। भारतीय संस्कृति अपने मानवतावादी वैश्विक दृष्टिकोण और प्रकृति के प्रति अपने दृष्टिकोण में अद्वितीय है। प्रकृति का संरक्षण भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, यहां पेड़ों, नदियों, वन्यजीवों और मवेशियों की हमारी पूजा से स्पष्ट है। इसी तरह भारतीय मूल्य दुनिया को एक परिवार के रुप में देखते है और हमें शेयर और केयर के अपने प्राचीन दर्शन को नहीं भूलना चाहिए। अपनी भाषा और परंपरा को बचाए रखना जरुरी है, वहीं दूसरों की भाषा और संस्कृति का सम्मान करना भी उतना ही जरुरी है।

भाषा एक प्रधान और महत्वपूर्ण सेतू है। इतिहास में एक भाषा-भाषी लोगों का झगड़ना दुर्लभ घटना नहीं है अमेरिका और इंग्लैंड में जो लड़ाई हुई थी वह भी एक भाषा के होते हुए भी साथ में यूक्रेन और रिशया आज के दौर में लड़ाई हो रह है वह भी एक भाषा के होते हुए भी। तथा महाभारत की लड़ाई क्या भिन्न-भिन्न भाषा भाषाओं में हुई थी हमें भाषा की साधना करते समय इन अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं को भूल नहीं जाना चाहिए। आज अगर हम खुली नजरों से देखे तो हमको इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाएगा कि एक भाषा की आवाज उठाते हुए भी हम में ब्र दक्षता और सांप्रदायिकता प्रवेश कर रही है। दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती रही है, क्योंकि भाषा ही एकमात्र एकता का हेतु नहीं है और भी बहुत से बातें है उनकी उपेक्षा करने से हम एक भाषा की प्रतिष्ठा करने में भी पद-पद पर बाधा अनुभव करेंग फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि भाषा एक प्रधान और महत्वपूर्ण सेतु है।

भाषा संस्कृति को मजबूत करती है, वहीं संस्कृति समाज को मजबूत बनाती है। भाषा एक संस्कृति है, उसके भीतर भावनाएं, विचार और सदियों की जीवन पद्धति समाहित होती है। मातृभाषा ही परम्परा और संस्कृति से जोड़े रखने की एक मात्र कड़ी है। राम-राम या प्रणम आदि सम्बोधन व्यक्ति को व्यक्ति से तथा समष्टि से जोड़ने वाली सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां है। बदलते परिवेश में जहां वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग का वर्चस्व बढ़ रहा है। वहीं उपभोक्तावादी बाजारवादी संस्कृति का भी प्रभाव तीव्र गति से जनजीवन को प्रभावित कर रहा है । भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरुप हमारी सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ-साथ व्यक्ति पर होते हुए समाज सापेक्ष होना चाहिए समाज सापेक्ष भाषा जीवन के विविध रुपो को प्रभावित करती है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति कितनी वैज्ञानिक और स्वास्थ्य के अनुकूल और विभिन्न वायरसों से लड़ने में समक्ष है। राम-राम या प्रणाम आदि सम्बोधन व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने वाली सांस्कृति क अभिव्यक्तियां है। कोरोना-19 में भारतीय संस्कृति की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। हाथ मिलाने से रोकने हेतु। हम पर तो सूर्य भगवान लगभग हर दिन ही कृपा करते है। हमारी मार्निंग तो उस दृष्टि से वैसे ही हर दिन गुड होती है। हाथ जोड़ने, नमन और झुकने की अपनी वैज्ञानिकता है। अर्थात् एक भाषा को नष्ट होने का अर्थ संस्कृति, विचार और एक जीवन पद्धति का मर जाना होता है। इसलिए भाषा को बचाना बहुत जरुरी है। नेशनल ब्रेन सेंटर में सम्पन्न एक वैज्ञानिक अध्ययन के अ नुसार हिन्दी या भारतीय भाषाएं बढ़ते और लिखते समय मस्तिष्क के दोनों तरफ के गोलार्द्ध सक्रिय होते है। जबकि अंग्रेजी पढ़ते समय केवल बांया ही जागता है। यह वैज्ञानिक मत है कि बांया

ISSN : 2582-9092

मस्तिष्क तर्क, विश्लेषण, खण्ड खण्ड दृष्टि और गणित से सम्बद्ध है और दांया आत्मीयता, भावना, संवेदना, कला, दया, ममता, करुणा, संगीत, काव्य, वात्सल्य, वस्तु को समग्रता से देखने आदि का प्रतिनिधित्व करता है। 2

भारत रत्न स्व. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की स्पष्ट मान्यता थी कि मातृभाषा में शिक्षा सर्वोत्तम परिणमदायी होती है। उन्होंने 19 जनवरी 2011 को नागपुर के धर्मपीठ साइंस कॉलेज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर कहा थ कि मैंने अपनी दसवीं तक की पढ़ाई अपनी मातृभाषा में ही की थी। उन्होंने श्रोताओं को सलाह दी थी कि यदि बच्चों में रचनात्मकता का विकास करना है और उनकी ग्रहण क्षमता (ग्रास्पिंग पॉवर) विकसित करना चाहते है तो उसे मातृभाषा में ही पढ़ाना चाहिए। नई शिक्षा नीति में इसका समावेश किया गया है।

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार - संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य के स्वाभाव में उसी तरह व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक अथवा दो दिन में नहीं होता, युग-युगान्तर में होता है। 3

हमारे वृहत्तर जीवन में योग साधन का कार्य करती है। भाषा उसी प्रकार जिस तरह गृह परिवार के जीवन में योग स्थापना करती है। बच्चों में आपसी झगड़े कितने भी क्यों ना हो यह स्नेहमयी मां की गोद में बैठ कर सभी द्वंद्व और झगड़े भूल जाते है जिस प्रकार सच्ची माता संतानों के भेद विभेद बिना दूर किए नहीं रह सकती उसी प्रकार सच्ची भाषा और संस्कृति भी अपनी संतान का भेद विभेद दूर किए बिना नहीं रह सकती। भाषा और संस्कृति का स्थान भी माता के समान ही है।

कोई कहता है कि माता भी कभी मिथ्या होती है मां तो सदा सच्ची ही होती है। हमारे देश में जिस भाषा को माता कहा गया है। उसकी मातृभाषा की गोद में तो हम सब ने जन्म लिया है उसी माता ने हमारे जिनमें स्वरुप की सृष्टि की है। वह माता विद्या कैसे हो सकती है हम भाषा रुपी माता को नाना भाव से कला साहित्य विज्ञान से समृद्धऔर अलंकृत कर सकते है पर उसे काट छांट गढ़ छोड़कर, माता बनाने का प्रयत्न करना नितांत दंभ मात्र है। भाषा को केवल भाषा मानकर हम चुप नहीं रह सकते हमें उसे संस्कृतियों विधाओं और कलाओं का महान संगम तीर्थ बना देना होगा अंग्रेजी भाषा की महिमा इसलिए नहीं है कि वह हमारे मालिकों की भाषा है बल्कि इसलिए है कि उसने संसार की समस्त विधाओं को आत्मसात किया है। अंग्रेजी में भी रहेंगे तो भी उनकी भाषा का आदर ऐसा ही बना रहेगा हिंदी को भी यही होना है उसे भी नाना संस्कृतियों विधाओं और कलाओं की त्रिवेणी बनाना होगा, बिना ऐसे बने भाषा की साधना अधूरी रह जाएगी। भाषा के विकास का अध्ययन संस्कृति के विकास के आलोक में होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति का सांस्कृतिक महत्व इस बात पर निर्भर है कि उसने अपने आपको हमसे कितना बंधन मुक्त किया है। वह व्यक्ति भी सुसंस्कृत है जो अपने आपको मांज कर दूसरे के उपकार के लिए उसे नम्र और विनीत बनाना है। जितना व्यक्ति मन कर्म वचन से दूसरों के प्रति उपकार की भावना और विचारों को प्रधानता देगा उसी अनुपात से समाज में उसका महत्व बढ़ेगा। हम उसी संस्कृति के नियम मानते है जिसकी भाषा हमें अच्छी तरह से बोलना आती है, क्योंकि हम हमारी पहचान अपनी भाषा से

ISSN : 2582-9092

संबंधित करते है। सारी दुनिया अपने भाषा के साथ जो संस्कृति आती है उसकी सम्मान करती है। हमारे मां-बाप वो पहले लोग है जो हमें भाषा सिखाते है और वो संस्कृतियां जो भाषा से संबंधित है। भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण संस्कृति का अंग होती है और उसे निरुपित भी करती है। जब दो भाषा टकराती है, भाषा दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायता का काम करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त जहां देश में आर्थिक समृद्धिकी आवश्यकता है। वहां सांस्कृतिक उत्कर्ष की भी समाज का सांस्कृतिक जागरण उसके बौद्धिक विकास पर निर्भर है। विद्यान्नती और सांस्कृतिक उत्थान परस्पर मैत्री है। 3

भाषा संस्कृति का अहम हिस्सा होती है। भारत की सभी भाषाएं और बोलियां संस्कृति का अहम हिस्सा है। हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई इन सभी के पूर्वज पीढ़ी-दर-पीढ़ी से अपनी भाषाओं में बोलते आए है लेकिन वर्तमान पीढ़ी आधुनिकता की ओर जा रही है भारतीयों को उनकी भाषा से दूर करने के लिए पहले मुगलों और फिर अंग्रेजों ने अपनी-अपनी भाषाओं को लादा जिसके च लते भारत की बहुत सी भाषाएं अपना अस्तित्व खो चुकी है और कुछ खेने के लिए तैयार है। भाषा को बचाने की जिम्मेदारी अखबार, टीवी, रेडियो, मोबाईल, इंटरनेट, सोशल मीडिया और तमाम संचार माध्यमों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे अपनी भाषा का जमकर और शुद्ध रुप में उपयोग करें। यदि वे ऐसा नहीं करते है तो निश्चित रुप से वे अपनी मातृभूमि और मातृभाषा की हत्या करने में प्रत्यक्ष औश्र अप्रत्यक्ष प से उत्तरदायित्व होंगे। आठवीं अनुसूचि के 22 भाषाएं वे भी कठिनाइयां का सामना कर रहे है। भारतीय भाषाओं के शिक्षण तथा अधिगम को स्कूल तथा उच्चतर शिक्षा में प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करना आवश्यक है। भाषाओं के शब्दकोशों और शब्दभंडाार को आधिकारिक रुप से लगातार अद्यतन किया जाता है। परंतु अपनी भाषाओं को जीवंत, प्रासंगिक बनाये रखने में प्रिंट सामग्री और शब्दकोश बनाने के मामले में भारत की गति काफी धीमी रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सबसे बड़ा दोष यह है कि वह हमारे बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक नहीं है। शिष्टाचार एवं नैतिकता किसे कहा जाता है यह कभी सिखाया ही नहीं जाता। बल्कि गणित, अंग्रेजी आदि विषयों पर जोर दिया जाता है, जिसे बच्चे पढ़ना तो सीख रहे है, लेकिन संस्कार, नैतिकता व शिष्टाचार किसे कहते है उससे अनभिज्ञ है। हमारे स्कूलों में बच्चों के व यक्तित्व का विकास सामाजिक वातावरण में रखते हुए करना चाहिए। भाषा में है संस्कार - तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहूं ओर। गोस्वामी तुलसीदास की ये पंक्तियां भाषा के महत्व को समझाने के लिए काफी है। भाषा से ही संस्कार जुड़े होते है। वर्तमान पीढ़ी अपनी भाषा से दूर होने के साथ ही संस्कारों से भी दूरी बना रही है, जिससे पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला बढ़ रहा है। हम जिस भाषा को महत्व देते है उसी भाषा की संस्कृति सीखते-समझते है। इसके लिए बच्चों को अपनी भाषा से जोड़े रखना बहेद जरुरी है। सत्य, शिव और सुन्दर ये तीन शाश्वत मूल्य है जो संस्कृति से निकट से जुड़े है। यह संस्कृति ही है जो हमें दर्शन और धर्म के माध्यम से सत्य के निकट लाती है। हमारी संस्कृति और हमारी भाषा कुछ हद तक दोनों में संभवित परिवर्तनों को निर्धारित करती है।

निष्कर्ष : संस्कृति और सांस्कृतिक को बनाए रखने और संबंधों को संप्रेषित करने के लिए भाषा

ISSN : 2582-9092

प्रयोग किया जाता है। हमारे मूल्यों और मानदंड़ों भाषा में पाए जाते है और जैसे संस्कृति में बदलाव पाए जाते है या फिर संस्कृति ही बदल जाती है भाषा और संस्कृति ऐसी प्रणालियां है जो एक-दूसरे को सुदृढ़ करती है और ऐसी किसी चीज को बाहर कर देती है जिसकी वे कल्पना नहीं कर सकते क्योंकि उनकी भाषा उन्हें उन चीजों के ब ारे में सोचने की अनुमति नहीं देती है या जिनमें उनकी संस्कृति शामिल नहीं है। भाषा संस्कृति का प्रतिबिंब होती है।

संदर्भ :–

1) परिवर्तित भाषिक परिदृश्य और हिंदी के रोजगारपरक आयाम
डॉ. जयश्री भास्कर वाडेकर - पृ. क्रमांक 41

2) संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह दिनकर - पृ. क्रमांक 653

3) भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य - वृंदावनदास - पृ. क्रमांक 8

श्रीमती दानकुंवर
महिला महाविद्यालय, जालना (महाराष्ट्र)